# □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□

Tuesday, 29 April 2014 11:25

□□□□ □□□□

जनसत्ता 29 अप्रैल, 2014 : आदरणीय प्रकाश करात जी, लोकसभा की आधी से ज्यादा सीटों पर चुनाव संपन्न हो चुके हैं□

लोकतंत्र का यह महापर्व अब अपने अंतिम प□ाव की ओर ब□ चला है□ यह चुनाव इस मायने में ऐतिहासिक लग रहा है कि इस बार विचारधारा पर व्यक्ति हावी हो गया है□ धर्मनिरपेक्षता की राजनीति करने वाले फासीवाद के आगमन की आशंका जता रहे हैं□ इस चुनावी कोलाहल के बीच वामपंथी दलों का हाशि□ पर चले जाना हमारे लोकतंत्र का □क ऐतिहासिक मो□ है□ उन्नीस सौ स□सठ में 'आलोचना' पत्रिका के □क अंक में हिंदी के मूर्धन्य आलोचक रामविलास शर्मा का □क साक्षात्कार छपा था, जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर देश में कभी फासीवाद आया तो उसकी जिम्मेदारी वामपंथी दलों की होगी□ मुझे नहीं मालूम कि आपने हिंदी के इस महान लेखक का नाम सुना है या उनके लेखन से आप परिचित हैं या नहीं, लेकिन आपको याद दिला दें कि कमोबेश देश में इस वक्त भी वैसे ही हालात हैं□ तब भी विपक्षी दल बिखरे हु□ थे और इस वक्त भी□

अगर देश में फासीवाद आया, जिसकी आशंका आपकी जमात के लोग जता रहे हैं, तो सही में इसकी जिम्मेदारी वामपंथी दलों की ही होगी□ हाल के वर्षों में जिस तरह से वामपंथी दल शिथिल प□ ग□ वह हमारे लोकतंत्र के लि□ चिंताजनक है□ लोकसभा चुनाव की गहमागहमी और नेताओं की जुबानी जंग और मीडिया में कयासों के शोरगुल में वामपंथी दलों की भूमिका पर चर्चा ही नहीं हो पा रही है□ वामपंथी दल भी चुनाव के दौरान अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में नाकाम हो रहे हैं□

पूरे देश में राजनीतिक पंडित इस चुनाव में राजनीतिक दलों की आसन्न जीत और हार का कयास लगा रहे हैं□ कुछ भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में लहर बता रहे हैं तो कइयों का मानना है कि दक्षिण और पूर्वोत्तर राज्यों में भाजपा की कमजोरी मोदी के कथित विजय रथ को रोक सकती है□ सबके अपने-अपने तर्क और कारण हैं□

जीत-हार के इन तर्कों, कारणों और दावों-प्रतिदावों के बीच □क बात जो खामोश मजबूती के साथ दिखाई दे रही है वह है इन चुनावों में वामपंथी दलों का अप्रासंगिक होना□ कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का तो यहां तक कहना है कि कांग्रेस और भाजपा भले ही जीत के दावों में उलझी हों लेकिन इस लोकसभा चुनाव में वामदलों की हार में किसी को संदेह नहीं है□ इस लोकसभा चुनाव में वामपंथी समूह की सबसे ब□ी पार्टी माकपा, जिसके आप महासचिव हैं, निष्क्रिय दिखाई दे रही है□ वामपंथी समूह गैर-कांग्रेसी और गैर-भाजपा दलों के बीच की धुरी क्यों नहीं बन पा रहे है?

अधिक पुरानी बात नहीं है, नब्बे के दशक में कामरेड हरकिशन सिंह सुरजीत ने अपने राजनीतिक कौशल से कई बार गैर-भाजपा और गैर-कांग्रेस दलों को □कजुट किया था और सरकार बनवाने में अहम भूमिका निभाई थी□ उसके बाद भी 2004 में कांग्रेस की अगुआई वाली सरकार के गठन में वामदलों की बेहद अहम भूमिका थी□ अब सिर्फ इतने दिनों में क्या हो गया कि तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन के □लान के चंद दिनों बाद जयललिता उससे बाहर

नक्ल आती है□ गुजरात में प्रोग्रेसवि फ्रंट आकर भी नहीं ले पाता है□ सांप्रदायक्ति-वरिोध के नाम पर दल्ली में गैर-कांग्रसी और गैर-भाजपा दलों को □कजुट करने का उनका प्रयास परवान नहीं च□ पाता है□ क्या साख का संकट है या फरि नेतृत्व का?

आपको इस बात पर मंथन करना चाहि□ कि 1952 में जब देश के पहले आम चुनाव का नतीजा आया था तो प्रमुख वपिक्षी दल के तौर पर उभरने वाली पार्ट्टी महज साठ साल में अप्रासंगकि होती क्यों दखि रही है□

आखरि क्या वजह है कि पश्चमि बंगाल और केरल जैसे मजबूत ग□ के अलावा बहिार और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में मजबूत प्रदर्शन करने वाली पार्ट्टी अब वहां काफी कमजोर दखिाई देती है□ बहिार के बेगूसराय को पूरब का लेननिग्राद कहा जाता था, लेकनि वहां भी पार्ट्टी को नीतीश कुमार के सहारे की जरूरत है□

मान्यवर, क्या आपको नहीं लगता कि वामदल अपनी दुर्दशा के लि□ खुद जम्मिेवार हैं□ जब देश आजाद हुआ था तो भाकपा ने इसको आजादी मानने से इनकार करते हु□ उसको बूर्ज्आ के बीच का सत्ता हस्तांतरण करार दयिा था□ भारतीय जनमानस को न समझने की शुरुआत यहीं से होती है□ जब पूरा देश आजादी के जश्न में डूबा था और नवजात गणतंत्र अपने पांव पर ख□े होने के लि□ संघर्ष कर रहा था तो आपकी वचिारधारा ने गणतंत्र के खलिाफ सशस्त्र वद्रिोह की शुरुआत कर देश की जनता को □कगलत संदेश दयिा था□ उस वक्त रूसी तानाशाह स्टालनि ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हु□ इस वद्रिोह को खत्म करने में भारत की मदद की थी□

महात्मा गांधी को भी 1947 में कहना प□ा था- कम्युनस्टि समझते हैं उनका सबसे ब□ा कर्तव्य, सबसे ब□ी सेवा (देश में) मनमुटाव पैदा करना, असंतोष को जन्म देना है□ वे यह नहीं सोचते कि यह असंतोष, ये ह□ातालें अंत में कसिे हानि पहुंचा□ंगी□ अधूरा ज्ञान सबसे ब□ी बुराइयों में से □क है...कुछ लोग ये ज्ञान और नर्दिेश रूस से प्राप्त करते हैं□ हमारे कम्युनस्टि इसी हालत में जान प□ते हैं...ये लोग अब □क्ता को खंडति करने वाली उस आग को हवा दे रहे हैं, जसिे अंग्रेज लगा ग□ थे□

गांधी के इस कथन को वामदलों के समूह ने कई-कई बार साबति कयि□ आप इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते कि भाकपा के वभिाजन के बाद वह रूस के इशारों पर चलती रही और अलग होकर बनी पार्ट्टी माकपा की आस्था चेयरमैन माओ में थी□ राजनीतकि वशि्लेषक और इतहिासकार □थोनी पैरेल ने ठीक ही कहा था- भारतीय मार्क्सवादी भारत को मार्क्स के सद्धिांतों के आधार पर बदलने की कोशशि करते हैं और वे हमेशा मार्क्सवाद को भारत की जरूरतों के अनुरूप ढालने की कोशशिों का वरिोध करते रहे हैं□ नतीजा यह हुआ कि मार्क्सवाद को भारतीय परप्रिेक्ष्य में वक्सिति और व्याख्यायति करने की कोशशि ही नहीं की गई□ नुक्सान यह हुआ कि मार्क्सवाद को भारतीय दृष्टि देने का काम नहीं हो पाया□

वामदलों के भारतीय जनमानस को नहीं समझने का □क और उदाहरण है इमरजेंसी का समर्थन□ इंदरि गांधी ने जब देश में नागरकि अधकिारों को मुअत्तल कर आपातकाल लगाया तो चेयरमैन □स□ डांगे ने इस तानाशाही का समर्थन कयि था□ उसका ही अनुसरण करते हु□ दल्ली की □कसभा में प्रगतशिील लेखक संघ ने भी भीष्म साहनी की अगुआई में इमरजेंसी के पक्ष में प्रस्ताव पारति कयि था□ ऐसे फैसले तभी होते हैं जब आप जनता का मूड नहीं भांप पाते हैं या फरि अपने नर्णियों के लि□ रूस या चीन की ओर ताकते हैं□

पार्टी कैडर की नाराजगी को भी डांगे ने रूस के इशारे पर नजरअंदाज किया और आंख मूंद कर इंदिरा गांधी के सभी फैसलों का समर्थन करने लगे इससे पार्टी और चेयरमैन डांगे दोनों का नुकसान हुआ था इमरजेंसी के फैसले के समर्थन के बाद लाख कोशिशों के बावजूद स डांगे मुख्यधारा में नहीं लौट पा और भाकपा भी मजबूती से ख ी नहीं हो पाई

यूपी - क के दौर में जिस तरह से आपने टमी करार पर सरकार से समर्थन वापस लिया और लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी के खिलाफ कार्रवाई की वह भी गलत आकलन के आधार पर फैसले का सर्वोत्तम उदाहरण है उस वक्त भी आपके नेतृत्व पर सवाल ख हु थे अपनी किताब- कीपिंग द फेथ: मेमॉयर ऑफ अ पार्लियामेंटेरियन- में सोमनाथ चटर्जी ने विस्तार से इस पूरे प्रसंग पर लिख कर आपको कठघरे में ख ा किया है

उन्होंने आपके तानाशाही मिजाज पर भी तंज कसते हु लिखा है कि उनको पार्टी से निकालने का फैसला पोलित ब्यूरो के पांच सदस्यों ने ही ले लिया जबकि सत्रह लोग इसके सदस्य थे उन्होंने आप पर पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की राय की अनदेखी का आरोप भी लगाया है

करात साहब, जिस तरह से आपने केरल के आपकी पार्टी के मजबूत नेता पिनियारी विजियन का समर्थन किया, उससे भी पार्टी की नैतिक आभा कम हुई है विजियन की छवि कैसी है, यह क्या आपसे छिपा है? करात साहब, मुझे लगता है कि वामदलों के समूह में आपकी पार्टी सबसे ब ी है इस नाते आपकी जिम्मेदारी है कि आप देश की राजनीति को व्यक्ति-केंद्रित होने से रोकें

आप इस तथ्य की ओर भी गंभीरता से विचार करें कि दिल्ली में गैर-सरकारी संगठन के माध्यम से काम करने वाला क शख्स किस तरह से पूरे देश की राजनीति को हिला रहा है

अरविंद केजरीवाल नाम के इस शख्स की राजनीति से हो सकता है आपका मतभेद हो लेकिन उसने क साथ कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी दोनों को चुनौती दी आज हालत यह है कि वामपंथी दलों से जु लोग आम आदमी पार्टी में अपना ठौर ढूं रहे हैं अरविंद केजरीवाल ने अपनी नैतिक आभा और जनता के मुद्दों से जु कर खुद को भारतीय राजनीति में प्रासंगिक बना लिया

करात साहब, आपकी पार्टी और आपके लाल समूह का तो आधार ही लोक है लेकिन अगर आप गंभीरता से विचार करेंगे तो पा ंगे कि आप लोग जन और लोक से दूर होते चले ग जनता के बीच जाकर उसकी समस्याओं को उठाना और उन समस्याओं पर जनांदोलन करना आप लोगों ने छो दिया बाजारवाद और नवउदारवाद के इस दौर का सबसे ज्यादा असर देश के श्रमिकों पर प ा है पूंजी के आगमन और पूंजीवाद के जोर ने श्रमिकों के हितों के रखवाले संगठनों को कमजोर कर दिया ये आपके दलों के आनुषंगिक संगठन थे

बाजार के खुलने के बाद जिस तरह से भारत में अथाह पूंजी का आगमन हुआ उसने देश के कई हिस्सों के औद्योगिक क्षेत्रों को तबाह कर दिया लेकिन आप लोग कोई आंदोलन ख ा नहीं कर पा सइजेड का चलन शुरू हुआ जहां श्रमिकों के अधिकारों की बातें बेमानी होने लगीं लेकिन आप लोग खामोश रहे या विरोध की रस्म अदायगी की करात साहब, किसी भी संगठन या पार्टी को प्रासंगिक बना रखने की जिम्मेदारी उसके नेता पर होती है उसका अहसास आपको होगा जरूरत इस बात की है कि आप गंभीरता से मंथन करें और वामदलों को क बार फिर से देश की राजनीति की परिधि से उठा कर केंद्र में स्थापित करें

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta